भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 739
बुधवार, 7 फरवरी, 2024 को उत्तर दिए जाने के लिए

पृथ्वी विज्ञान में विकास

†739. श्री नायब सिंह सैनी:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) वर्ष 2014 से देश द्वारा पृथ्वी विज्ञान के क्षेत्र विशेषकर वायुमंडलीय प्रेषण प्रणालियों, कृषि मौसम परामर्शी सेवा आदि में किए गए विकास का ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार का गहरे समुद्र में खनन और नीली अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देने के लिए गहरे समुद्र में सर्वेक्षण करने का विचार है; और

(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या हैं?

उत्तर
पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(श्री किरेन रीजीजू)

(क) प्रचंड मौसम की घटनाओं की निगरानी एवं पूर्वानुमान में सुधार करने के लिए महत्वपूर्ण विकास किए गए हैं, इसके लिए देश में प्रेक्षण नेटवर्क का विस्तार किया गया है, जिसमें वर्ष 2014 से अब तक निम्नलिखित प्रगतिशामिल है:

- डॉपलर मौसम रेडारनेटवर्क की संख्या वर्ष 2014 में 15 की तुलना में वर्ष 2023 में 39 तक पहुंचाई गई।
- स्वचालित मौसम केंद्रों की संख्या वर्ष 2014 में 675 की तुलना में वर्ष 2023 में 1208 तक पहुंचाई गई।
- स्वचालित वर्षामापियों की संख्या वर्ष 2014 में में 1350 की तुलना में वर्ष 2023 में 1382 तक पहुंचाई गई।
- हाई विंड स्पीड रिकॉर्डर्स की संख्या वर्ष 2014 में 19 की तुलना में वर्ष 2023 में 35 तक पहुंचाई गई।
- ऊपरीतन वायु प्रेक्षण प्रणालियों की संख्या वर्ष 2014 में 43 की तुलना में वर्ष 2023 में 35 तक पहुंचाई गई।
- 23 मैनुअल पायलट बैलून स्टेशनों को अपग्रेड करके ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम आधारित स्टेशन का रूप दिया गया, जबकि वर्ष 2014 में कोई भी ग्लोबल पोजीशनिंग सिस्टम आधारित पायलट बैलून स्टेशन नहीं था।
- देश में विभिन्न हवाई अड्डों पर रनवे विजुअल रेंज की संख्या वर्ष 2014 में 20 की तुलना में वर्ष 2023 में 138 तक पहुंचाई गई।
- देश में हवाई अड्डों पर फ्रैंजिबल मास्ट्स पर डिजिटल करेंट वेदर सिस्टम्स की संख्या वर्ष 2014 में 29 की तुलना में वर्ष 2023 में 107 तक पहुंचाई गई।
- देश में विभिन्न हेलीपोर्ट्स पर 8 हेलीपोर्ट मौसम प्रेक्षण प्रणालियां स्थापित की गई, जबकि वर्ष 2014 में कोई भी मौसम प्रेक्षण प्रणाली नहीं थी।
- जिलावार वर्षा निगरानी स्कीम स्टेशनों की संख्या वर्ष 2014 में 395 की तुलना में वर्ष 2023 में 5896 तक पहुंचाई गई।

कृषि मौसम विज्ञान परामर्शिका सेवाएं वर्ष 2018 मेंजिला स्तरसे लेकरब्लॉक स्तर तक पहुंचाई गई हैं। वर्तमान में, कृषि की दृष्टि से महत्वपूर्ण सभी 700 जिलों और लगभग 3100 ब्लॉक तक कृषि-मौसम विज्ञान संबंधी परामर्शी सेवाएं पहुंचायी जा रही हैं।

(ख) जी हां।

(ग) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय ने समुद्र आधारित अर्थव्यवस्था में सहायता देने और समुद्री संसाधनों कासतत दोहन करने के लिए गहरे समुद्र के संसाधनों के अन्वेषण हेतु वर्ष 2021 में डीप ओशन मिशन लॉन्च किया है।अभी तक, मध्य हिंद महासागर बेसिन में पॉलीमेटैलिक नॉड्यूल्स (निकेल, कोबाल्ट, तांबा, तथा मैंगनीज इत्यादि) तथा मध्य एवं दक्षिण पश्चिमी इंडियन रिज में हाइड्रोथर्मल सल्फाइड (तांबा, जिंक इत्यादि) की खोज केलिएगहन सर्वेक्षण तथा अन्वेषण कार्य किया गया है। इसअन्वेषण में इस क्षेत्र में हाइड्रोथर्मल गतिविधि वाले कुछ बहुत अधिक संभावना वाले स्थानों तथा सल्फाइड खनिज क्षेत्रों की पहचान की गई है।

****